जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

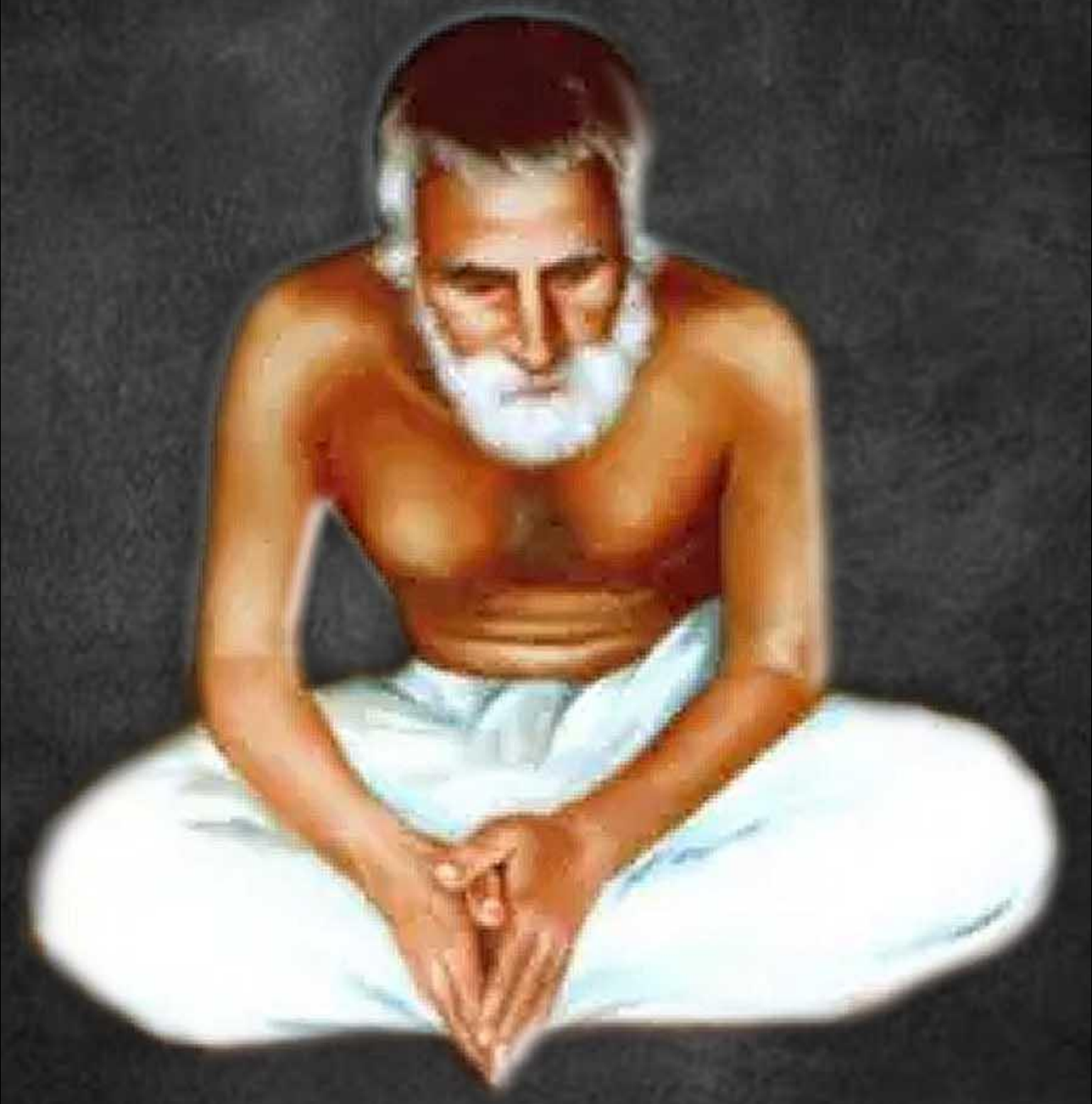

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

श्रीनाम भजन ही ऐकान्तिकता

श्रीलगुरुदेव

श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के गुरु स्थान के कोई एक प्राचीन वैष्णव एकान्त भाव से सब समय श्रीनाम भजनमय आचरण का आदर्श प्रकाशित न कर अर्चन कार्य में रत रहते। कुलिया में रहते समय श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज ने एक दिन कथा प्रसंग में हमारे श्रील प्रभुपाद के सामने कहा,

— “अहो कितने दुख की बात है कि *प्रभु ने अन्त में अर्चन करना आरम्भ किया है ! " वह सुनकर श्रील प्रभुपाद ने कहा, — “आप क्या मेरी वंचना कर रहे हैं? आपके गुरु के स्तर के व्यक्ति के आचरण में किसी प्रकार का उल्लंघन नहीं हो सकता ।" श्रील बाबाजी महाराज ने कहा, " तब मैं इस सम्बन्ध में और कुछ नहीं कहूँगा।" श्रील बाबाजी महाराज ने निष्किंचन ऐकान्तिक हरिभजन करने वालों को एकमात्र श्रीनाम आश्रय को छोड़कर, अर्चनादि आरम्भ करने में, निरपेक्षता की हानि हो सकती है,

इस विचार से ही उस प्रकार का उपदेश दिया।

श्रीलगुरुदेव